पाठ 12. शहीद बकरी

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में निर्णय-क्षमता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे महत्वपूर्ण मुद्दों को समझकर उनसे रचनात्मक रूप से निपटने में सक्षम हो सकें। स्वतंत्रता एक ऐसा जीवन मूल्य है जिसे किसी ने यदि अनुभव कर लिया तो वह इसे पाने के लिए अपने अमूल्य जीवन को भी दाँव पर लगा सकता है। ऐसा व्यक्ति प्रेरक व्यक्तित्व बन जाता है। उसी के जगाए आसपास के लोगों में स्वतंत्रता की ललक जागती है। ऐसे ही स्वतंत्रता प्रेमियों के काटने से पराधीनता की बेड़ियाँ कटती हैं।

पाठ का सार

कहानीकार अयोध्याप्रसाद गोयलीय की कलम से स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित करती यह कहानी बकरी, भेड़िया और आसपास के वातावरण और अलग-अलग तरह से सोचने के तरीकों के बीच से जन्म लेती है।

एक चरवाहे ने देखा कि पहाड़ पर चरने जाती उसकी बकरियों में से हर दिन एक बकरी कम हो जाती। वह भेड़िये की धूर्तता और अपने नुकसान से परेशान हुआ और उसने अपनी बकरियों को नीचे मैदान पर बाड़े में ही बंद रखना उचित समझा। मारे भूख-प्यास के बकरियों के प्राण सूखने लगे। ऊपर पहाड़ पर चरने जाएँ तो उनके प्राणों को संकट था। अधिकतर बकरियों ने बाड़े में कैद रहकर धीरे-धीरे मर जाना ही श्रेयस्कर समझा।

एक युवा बकरी ने साहस किया। वह पहाड़ पर गई। उसका भेड़िये से सामना हुआ। उसने बड़ी समझदारी से उसे एक सीमा तक युद्ध में पछाड़ा। बकरी अंततः शहीद हो गई और भेड़िया भी मरणासन्न अवस्था में पहुँच गया।

शहीद बकरी के इस व्यवहार पर तोता-मैना की अलग-अलग प्रतिक्रिया ने बताया कि एक ही समाज में लोग आज़ादी के दीवानों के व्यवहार को लेकर कैसी-कैसी सोच रखते हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कहानी शुरू करने से पहले प्रतिदिन के जीवन में गलत व्यवहारों के प्रति आवाज़ उठाने के हमारे फ़ैसलों पर चर्चा करते हुए कहानी की मूल चेतना के निकट बच्चों को लाया जाए। कहानी के मुख्य बिंदुओं और कथा सार के द्वारा बच्चों में जिज्ञासा पैदा करते हुए कहानी का वाचन (मुखर) उच्चारण में परिमार्जन, शब्दों के अर्थ व वाक्यों के भावार्थ व अभिप्राय प्रसंगवश स्पष्ट किए जाएँ। बीच-बीच में पठित अंश से प्रश्न करते हुए अर्जित ज्ञान का परीक्षण व पुनरावृत्ति की जाए। तदंतर प्रश्नोत्तर विद्यार्थियों के सहयोग से पूरे किए जाएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 3** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - लिंग-वचन संबंधी प्रश्नों के हल के लिए अध्यापक इसी तरह के दूसरे प्रयोगों जैसे–घाव (पुल्लिग) की तरह चाव जैसे उदाहरण दें। 'खून मुँह लगना' के समानांतर 'खून का प्यासा होना' जैसे मुहावरे भी दिए जाएँ। विशेषण पदबंधों को रेखांकित करवाएँ। काल के

भेद संबंधी प्रश्नों को हल करने के लिए एक ही वाक्य को काल के तीन प्रमुख रूपों में परिवर्तित करके दिखाया जाए। जैसे–मैंने पुस्तक पढ़ी, मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ और मैं पुस्तक पढ़ूँगा।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - ❖ साहसी व्यक्ति की खोज के लिए विद्यालय में किसी छात्र-छात्रा या अन्य कर्मचारी जिसने ऐसा कोई काम हाल ही में किया हो, से साक्षात्कार के लिए उनका नाम सुझा सकते हैं।
  - ❖ 'साहस के बिना जीवन अधूरा है।'–इस विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित करवाएँ।
  - ❖ भेड़िये के हाव-भाव व स्वभाव के बारे में जानकारी प्राप्त करवाएँ। इसके लिए इंटरनेट का सहारा लिया जा सकता है।